International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रणेन्द्र के उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' में वर्णित असुर समाज का जीवन संघर्ष

*** कुणाल किशोर (शोधार्थी)**
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

**** डॉ0 राकेश कुमार रंजन (शोध निर्देशक)**
सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश ¯ असुर भारत में रहने वाली एक प्राचीन आदिवासी समुदाय है। ये झारखण्ड राज्य के गुमला, लोहरदगा, पलामू, लातेहार जिलों में निवास करते हैं। इन्हें तीन गोत्रों में विभाजित किया गया है–वीर असुर, अगोरिया असुर और विरजिया असुर। वीर असुर जंगलों में निवास करने वाली जनजाति है। अगोरिया असुर आग का काम करते हैं। विरजिया असुर घूम–घूम कर खेती करने वाली जनजाति है। विरजिया को झारखण्ड प्रदेश में अलग अनुसूची का दर्जा प्राप्त है। इसलिए इन्हें असुर जनजाति के साथ नहीं रखा जा सकता है। 1971 ई0 के जनगणना के अनुसार इनकी कुल आबादी 7783 थी।

औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, पूँजीवाद विश्व के मानस पर दखल दिया है। जिसका परिणामस्वरूप जंगलों में निवास करने वाले जनजाति समुदाय को उनके मूल स्थानों से बेदखल किया जा रहा है। जिससे वे पलायन करन को विवश हो चुके हैं। परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हुई है कि असुर जनजाति आज समाप्त होने के कगार पे हैं। असुरों का जीवन, जमीन और जान–माल खतरे में है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' में इनके ऊपर हो रहे अत्याचार और दमन का सचित्र चित्रण किया गया है।

× × ×

मुख्य शब्दः– **आदिवासी, जनजाति, असुर, विकास, समाज, समुदाय, जंगल, जमीन, प्राकृतिक एवं संस्कृति।**

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास झारखण्ड के जनजाति समुदाय असुर समुदाय को केन्द्रित कर लिखा गया है। यह पुस्तक भारतीय ज्ञानपीठ से सन् 2009 ई0 में प्रकाशित हुई है। इस उपन्यास म 'असुर' के आत्म सम्मान, विकास, अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा और संघर्ष का वर्णन किया गया है। रणेन्द्र अपने उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' के माध्यम से कहते हैं–सभ्यता और विकास के नाम पर प्राकृतिक संपति को समाप्त किया जा रहा है। प्राकृतिक जीवन शैली में महरूफ समुदाय के भावनाओं के साथ खिलवाड़, उनके परंपराओं को तोड़ना, उनके आस्थाओं पर खिन्न होना, उनके जल, जंगल, जमीन रूपी प्राकृतिक संसाधनों संपदा से बेदखल कर उन्हें हाशिये पर लाकर खड़ा कर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिया है। असुर समुदाय प्रकृतिक प्रेमी होने के साथ प्रकृति पर निभर रहने वाली जनजाति है। किसान असुर खेती के भरोसे अपना गुजर बसर करते हैं। "मक्का की एक बरसाती फसल के भरोसे जिन्दगी कितनी कठिन हो जाती है, मजूरी और जंगल का सहारा जो नहीं तो लोग आसाम भूटान निकल जाए।"[1]

समालोचक मिथलेश 'ग्लोबल गाँव के देवता' के संदर्भ में लिखते है कि– "वैश्वीकरण मुख्यधारा की संस्कृति बनाम हाशिये की सामानंतर संस्कृति के बीच छिड़े संघर्ष को बड़ी शिद्दत से उभारता है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' में उठाए गये सवाल पाठक के अन्तर्मन को झकझोरती ही नहीं वरन् उसकी भयावहता से दो–चार कराकर स्थितियों एवं जिम्मेदार लोगों के खिलाफ खड़े होने की जरूरतो से रूबरू कराते है।"[2] अदिवासी क्षेत्रों में रहने का अवसर 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास के पात्र धुन्ना को मिला। धुन्ना जब पहली बार ऐतवारी से मिलकर बातचीत करता है तब उसे पता चलता है कि ये जनजाति जिन्ह हम असुर कहते हैं वे भी हमारी तरह इंसान है। धुन्ना की धारणा जिसे बचपन में ही बतलाया गया था कि असुर नरभक्षी होते हैं। असुर लालचन दा के कद–काठी और शिक्षण को देखकर उसकी धारणायें परिवर्तित होते हैं।

असुर जनजातियों का पेशा विलुप्त होने के कागार पर है। टाटा, बिरला, वेदांता वाली कंपनी ने असुरो की पहचान छीन ली है। इन्होंने जो धातुओं को पिघलाकर औजार बनाया उसे कंपनी ने अपना बड़ा नाम देकर इनकी मूल व्यवसाय को समाप्त करने पर उतारू है। झारखण्ड, छोटा नागपुर, छतीसगढ़ के इलाकों में बसे आदिवासी जनजाति समुदाय के लोग नौकरी और रोजगार के लिए भटक रहे हैं। जिसका फायदा ठग–ठेकेदार, खदान मालिक उठा रहे हैं। रणेन्द्र ने असुर महिला के ऊपर हो रहे शोषण, अत्याचार का जिक्र करते हुए लिखते हैं कि–"कोई बाहरी जन दलाल थोड़े है। यही रामचन सिंहवा जैसे घरे–गाव के आदमी दलाली करते हैं। कच्ची उम्र की लड़कीमन के फूसलाना। दिल्ली, कलकत्ता का सब्जबाग दिखाना।"[3] असुर महिला सयानी होती है। इन्हें पुरुष के साथ समान हक और अधिकार है।

असुर जनजाति सामाजिक वातावरण से इतर नदी, पहाड़ में निवास करती है। जिसके कारण बुड़कब, देहाती, अनपढ़, वनवासी हैं। ये तथाकथित मुख्यधारा द्वारा अपमान सहते हैं। उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' में सैतीस गाँव को खाली करने हेतु नोटिस देने का जिक्र हुआ है। जिसमें सबसे अधिक बाईस गाँव असुर जनजातियों का है। उनके संघर्ष और आंदोलन से कई बार घर जलाया जाता है। आंदोलन के तीव्र फैलाव और शासन–प्रशासन की राजनीतिक चाल से ये असुर जनजातियों को जीवन का परित्याग करना पड़ा है। ये वनवासी अखड़ा में बैठक करते थे, पूरा गाँव एकत्रित होकर वेदांत कम्पनी के हड़ताल की योजना बनाते हैं। "अम्बाटोली की बैठक में सारे पाट के हर गाँव के बड़े बुजूर्ग बैगा–पाहन, पुजार–महतो सब जुटे। पुरानी मांगों के साथ–साथ एक नया नारा जुड़ा–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'जान देंगे–जमीन नहीं देंगे।"[4] आदिवासियों के सतत् उन्नति, विकास एवं संस्कृति के रक्षा में कितनों महापुरुषों ने कुर्बानी दी है। इनके बलिदान की गाथा पहाड़ो, जंगलों, नदियों और गुफाओं के कंदराओं में शौर्यपूर्वक गूंजती रहती है। रामदयाल मुंडा, बिरसा मुंडा, निलाम्बर–पिताम्बर की संघर्ष जल, जंगल, जमीन को बचाने के लिए थी।

जनजाति स्त्रियों के संघर्ष एवं योगदान को भूलाया नहीं जा सकता है। 'ग्लोबल गाँव के देवता' में रणेन्द्र कहते हैं कि–"धरती भी स्त्री, प्रकृति भी स्त्री, सरना माई भी स्त्री और उसके लिए लड़ाई लड़ती सत्यभामा, इरोम शर्मिला, सी.के.जानू, सुरेखा दलवी और यहाँ पाट में बुधनी दी और सहिया ललिता भी स्त्री।"[5]

जनजातिय असुरो की पर्व–त्यौहार हरिअरी, सोहराय, सरहुल, झूमर, करमा को मनाते हैं। ये अपने पित्तर–पुरखों को याद करते हुए अपने धार्मिक सांस्कृतिक संस्कार को संपन्न करते हैं।

शासन प्रशासन और सत्ता रौद्र का धौस इन असुरो की खनिज संपदा, जंगल, नदियाँ को अपने अधिकार में ले लिया है। वे इनकी संपदा के मालिक बन बैठे हैं। "इन खनिजों पर जंगलों में घूमते हुए, लंगोट पहने असुर–बिरजिया, उरांव, मुंडा आदिवासी दलित सदान दिखते हैं।"[6]

निष्कर्ष:– रणेन्द्र द्वारा रचित 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में असुरों के साथ अत्याचार और उनके संघर्षो की व्यापकता है। तथाकथित मुख्यधारा के सभ्यता और संस्कृति के पोंगापंथियों ने असुरों का जीवन दुलर्भ कर दिया है। असुर लड़कियों के साथ दुनिया का सब्जबाग दिखाकर कुकर्मों में ढ़केला जा रहा है। उनके साथ सौदेबाजी बलात्कार की जघन्यता की जा रही है। उनकी बस्तियाँ तथा जंगल को बर्बाद किया जाना। रणेन्द्र की व्यथा है जो हमें बिल्कुल सही दिखाई पड़ती है।

असुर महिलायें पुरुषों के साथ सम्मान की हकदार है। इनकी महिलायें जनानी नहीं 'सयानी' कहलाती है। प्रकृति को सरना माई तथा 'बुरूबोगा' देवता है। स्त्रियाँ सुख–दुःख में पुरुषों के साथ मिलकर कष्ट का सामना करने वाली हैं। यह इस समुदाय की ताकत है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास झारखण्ड की भूमि से उपजा साहित्य है। जिसमें असुर परंपरा के हाशिये पर मनुष्यता, जीवन, संस्कृति आदि को अभिव्यक्त किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 3, March 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भः–

1ण रणेन्द्र–'ग्लोबल गाँव के देवता', प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–तीसरा–2016, पृ सं0–30

2ण मिथलेश–वैश्वीकरण का त्रासद आख्यान, आलोचना प्रकाशन, राँची विश्वविद्यालय, अप्रैल–जून संस्करण–2013, पृ सं0–100

3ण रणेन्द्र–'ग्लोबल गाँव के देवता', प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–तीसरा–2016, पृ सं0–13

4ण रणेन्द्र–'ग्लोबल गाँव के देवता', प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–तीसरा–2016, पृ सं0–79

5ण रणेन्द्र–'ग्लोबल गाँव के देवता', प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–तीसरा–2016, पृ सं0–92

6ण रणेन्द्र–'ग्लाबल गाँव के देवता', प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–तीसरा–2016, पृ सं0–93